माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की समस्या समाधान योग्यता के सन्दर्भ में उनके समायोजन, आत्म-जागरुकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

आई.आई.एम.टी. विश्विद्यालय, मेरठ

के अंतर्गत

शिक्षाशास्त्र विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पी-एच.डी.) की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध रूपरेखा

शोध निर्देशिका

डॉ. सरिता गोस्वामी

एसोसिएट प्रोफेसर , एम.ए. (हिन्दी ,अंग्रेजी),

एम.एड. नेट (शिक्षाशास्त्र), पी-एच डी (शिक्षाशास्त्र)

शोधकर्ता

ओरूषि सक्सैना

नामांकन संख्या IIMTU/1971262

प्रवेश आईडी संख्या 21191529

शिक्षा संकाय

आई.आई.एम.टी. विश्विद्यालय गंगा नगर, मवाना रोड, मेरठ (उ.प्र.)

(2019)

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही शिक्षा का इतिहास अत्याधिक महत्वपूर्ण रहा है। वैदिककाल से ही शिक्षा को कई अर्थों में जाना जाता है जैसे-विद्या, ज्ञान, आचरण एवं बोध। शिक्षा का तात्पर्य उस शिक्षा से है जो वैदिक युग में बालक के गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने से पूर्व दी जाती थी। इस प्रकार की शिक्षा गुरूकुल में गुरू के द्वारा प्राप्त होती थी। अतः शिक्षा का वास्तविक अर्थ है कि व्यक्ति को सभ्य एवं सर्वोच्च की स्थिति तक ले जाना है। शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जो बालक को प्राथमिक पाठशाला (माता-पिता से प्राप्त शिक्षा) से ही मिलती है और उम्र भर किसी-न-किसी रूप में व्यक्ति को प्राप्त होती रहती है। मनुष्य का दूसरा जन्म शिक्षा ही है अर्थात् अज्ञानी व्यक्ति को अधूरा व्यक्ति ही स्वीकार किया जाता है क्योंकि उसमें सोचने एवं निर्णय लेने की क्षमता नहीं होती है जबकि ज्ञानी व्यक्ति कुशलतापूर्वक अपने कार्य को करने में सक्षम होता है, इसलिए उसे वास्तविक एवं श्रेष्ठतम् व्यक्ति की श्रेणी में रखा जाता है। इस प्रकार शिक्षा के माध्यम से ही वह भवसागर से निकलकर मोक्ष के द्वार को खोज लेता है। इस प्रकार वैदिक युग में शिक्षा को मनुष्य का तीसरा नेत्र कहा गया है क्योंकि ज्ञान रूपी तीसरा नेत्र ही समस्त जगत का ज्ञान कराता है।

डॉ. ए. एस. अल्टेकर (1959)[(1)] ने कहा है, "शिक्षा को प्रकाश और शक्ति का ऐसा स्रोत माना है जो हमारी शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों तथा क्षमताओं का निरन्तर एवं सामंजस्य पूर्ण विकास करके स्वभाव को परिवर्तित करती है और उसे उत्कृष्ट बनाती है।"

एस. के. मंगल (2007)[(13)] के अनुसार, "शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण गतिविधि है जो बालक के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के समग्र व संतुलित विकास की ओर निर्देशित होती है।"

डॉ. जे. सी. अग्रवाल (2010)[(15)] के अनुसार, "शिक्षा वह प्रक्रिया है जो व्यक्तिगत एवं सामाजिक अनुभवों के माध्यम से वांछित व्यवहारिक परिवर्तन लाती है।"

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में ऐसे परिवर्तन को लाना है जो समाज के विकास, जीवन निर्माण, रचनात्मक कार्य एवं दूसरों की सहायता करने और राष्ट्रीय महत्व के कार्यों में भाग लेने के लिये आवश्यक होते है। शिक्षा के द्वारा ही हमे समाज की कुरीति और अन्याय से मुक्त होने की प्रेरणा मिलती है। मनुष्य जन्म से ही अज्ञानी और संस्कारहीन होता है शिक्षा के माध्यम से ही वह ज्ञान प्राप्त कर ज्ञानी और औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से वह संस्कार को प्राप्त कर पाता है। शिक्षा ही आम व्यक्ति को समाज में अलग कर एक विशिष्ट स्थान दिलाने में सामर्थ्य रखती है तथा मानव व्यवहार को परिष्कृत करती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता के संदर्भ में उनके समायोजन, आत्म- जागरुकता एवं शैक्षिक उपलब्धि के परीक्षण द्वारा अध्ययन करके छात्र व छात्राओं के आवश्यकता एवं महत्व को ज्ञात कर सकते हैं जो उनके पूर्ण विकास का मार्गदर्शन करता है साथ ही सभी आवश्यकताओं को निर्धारित करने में एवं निर्णय लेने में भी सहायता करता है।

इस शोध की आवश्यकता माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए है यदि विद्यार्थियों में समस्या समाधान योग्यता के संदर्भ में उनके समायोजन, आत्म जागरुकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करते हैं तो यह शोध शिक्षा के लिए माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में तनाव और असमायोजन को कम करने में सहायक हो सकता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

प्रस्तुत अध्ययन की सहायता के लिये शोधकर्ता ने शोध समस्या से सम्बन्धित साहित्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता के संदर्भ में उनके समायोजन, आत्म जागरुकता, एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन विस्तार से किया है। विद्यार्थियों के समस्या समाधान, समायोजन, आत्म-जागरुकता एवं शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित देश एवं विदेशों में हुए अध्ययन से जो निष्कर्ष प्राप्त हुये हैं उनको निम्नलिखित रूप में व्यक्त किया जा सकता है -

समस्या समाधान योग्यता से संबंधित अध्ययन

जैन (2000)[(3)] ने भौतिकी में सृजनात्मक समस्या समाधान का विकास शीर्षक पर अध्ययन किया। इस
अध्ययन में भौतिकी के क्षेत्र में सृजनात्मक समस्या समाधान के विकास में अभिसारी चिन्तन की भूमिका का अध्ययन किया है। ऑसबर्न के कार्य के आधार पर अध्ययनकर्ता ने सुझाव दिया कि छात्रों में समस्या की प्रकृति को समझने की दक्षता होनी आवश्यक है, समस्या के अन्तर्निहित भाव को समझ कर और गणितीय कौशलों का प्रयोग समस्या समाधान हेतु करना चाहिए। भौतिकी की समस्या के समाधान के लिए सामान्य योग्यता को दृढ़ करना आवश्यक होगा।

शफी (2000)[(2)] ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के जीव विज्ञान छात्रों की समस्या समाधान योग्यता पर अध्ययन किया, जिसमें निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए है मानव मस्तिष्क सूचनाओं के प्रक्रिया के लिए दोनों गोलार्ध का प्रयोग करता है। बायां गोलार्ध अभिसारी चिन्तन जबकि दाहिना गोलार्ध अपचारी चिन्तन को प्रदर्शित करता है। इन्होने प्रदर्शन करने का प्रयास किया कि चिन्तन के दोनों पक्षों के द्वारा जीव विज्ञान शिक्षण सामग्री को उन्नत किया जा सकता है।

दत्त (2001)[(4)] ने 10 वी कक्षा के विद्यार्थियों के विभिन्न प्रकार के संज्ञानात्मक शैली के गणित में शाब्दिक सृजनात्मकता तथा समस्या समाधान योग्यता का अध्ययन किया। अध्ययन में सृजनात्मकता तथा समस्या समाधान योग्यता में सार्थक सम्बन्ध पाया गया ।

पांडे (2010)[(16)] ने औपचारिक शिक्षा में समस्या समाधान योग्यता अध्ययन किया। प्रस्तुत न्यादर्श के रूप में 205 विद्यार्थियों को चुना गया जिसमें औपचारिक विद्यालय के 105 तथा अनौपचारिक विद्यालय में 100 विद्यार्थियों को लिया गया है। इनमें 123 छात्र तथा 82 छात्राएँ है। निष्कर्ष में पाया गया कि कार्य 1 में औपचारिक तथा अनौपचारिक विद्यालय के विद्यार्थियों के प्रदर्शन में सार्थक अन्तर पाया गया जबकि कार्य 2 तथा कार्य 3 के संदर्भ में दोनों समूहों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

समायोजन से संबंधित अध्ययन

रणविजय सिंह (2007)[12] ने उच्च समायोजित तथा निम्न समायोजित विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया।

उद्देश्य उच्च समायोजित तथा निम्न समायोजित विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च समायोजन स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक निष्पत्ति भी उच्च स्तर की होती है। अतः उच्च शैक्षिक निष्पत्ति हेतु समस्त शिक्षण संस्थाओं में शिक्षकों को छात्रों में उच्च समायोजन की क्षमता विकसित करने का प्रयत्न किया जाना चाहिए।

सारिका तिवारी (2009)[14] ने समायोजन क्षमता पर अध्ययन करते हुए अपने अध्ययन का उद्देश्य बनाया था कि शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना जिससे निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुआ-

शहरी विद्यालयों एवं ग्रामीण विद्यालयों के उ.मा. स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर नहीं है अर्थात विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता इस बात से प्रभावित नहीं होती है कि वे शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत् है कि ग्रामीण विद्यालयों में अर्थात् समायोजन क्षेत्र में विशेष से अप्रभावित रहता है।

राव सुनील (2015)[19] ने माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण किशोरों के व्यक्तित्व समायोजन का अध्ययन किया न्यादर्श के रूप में कानपुर नगर एवं देहात के 600 छात्रों का चयन किया गया जिसमें तीन शहरी क्षेत्र के तथा 300 छात्र ग्रामीण क्षेत्र के थे। निष्कर्ष में यह पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों का समायोजन शहरी छात्रों की तुलना से कम है।

आत्म-जागरूकता से संबंधित अध्ययन

डुवाल, टी. एस., सिल्विया, पी. जे. (2002)[5] ने आत्म-जागरुकता सुधार की सम्भावना तथा स्वयं सेवा पूर्वाग्रह का अध्ययन किया। इस अध्ययन में 40 मनोविज्ञान के छात्रों का चयन किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि आत्म जागरुकता का प्रभाव सुधार की सम्भावना पर सकारात्मक पड़ता है।

ब्रेनर, बी. आर. (2003)[6] ने आत्म जागरुकता, आत्म दक्षता तथा समायोजन का अध्ययन किया। इस अध्ययन में इन्होंने यू० एस० विश्वविद्यालय के 103 विद्यार्थियों का चयन किया। आँकड़ों को एकत्रित करने हेतु ऑसबर्ग (1985) द्वारा निर्मित आत्म जागरुकता प्रश्नावली, डेविस, शर्बर्न, पीटरसन एवं वेयर (1988) द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य इनवेन्ट्री तथा वार्ड एवं केनेडी (1999) द्वारा निर्मित सामाजिक-सांस्कृतिक समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण करने हेतु प्रतिशत, अनुपात, सहसम्बन्ध, मध्यमान प्रमाप विचलन आदि का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों में पाया गया कि आत्म-जागरुकता को व्यवस्थित तरीके से परिवर्तित किया जा सकता है यह भी पाया गया कि मानसिक समायोजन पर आत्म जागरुकता का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

मायर्स, एस. (2003)[7] ने अध्ययन किया कि व्यक्तित्व विकास में आत्म जागरुकता की क्या भूमिका है इस अध्ययन हेतु इन्होंने एक गुणात्मक शोध किया। इसमें इन्होंने परामर्श शिक्षा के स्नातक स्तर के 16 विद्यार्थियों को लिया। आँकड़ों के संग्रह हेतु विभिन्न प्रकार से विद्यार्थियों से सम्पर्क किया गया। अध्ययन में पाया गया कि व्यक्तित्व विकास को आत्म जागरुकता प्रभावित करती है।

शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित अध्ययन

अली अहमद (2012)[18] ने 'प्राथमिक विद्यालय के बच्चों की उपलब्धि स्तर का अध्ययन किया। अध्ययन हेतु असम राज्य के बोनगे जिले के 5 विकास खण्ड के 41 विद्यालयों के 1000 विद्यार्थियों का चयन किया गया। अध्ययन में कक्षा 2 एवं 4 के 464 विद्यार्थियों में से 260 बालक एवं 204 बालिकाएं तथा कक्षा 2 के 646 विद्यार्थियों में से 309 बालक तथा 337 बालिकाएं भी थीं। शोधार्थी ने अध्ययन में पाया कि कक्षा 2 की बालिकाओं का उपलब्धि स्तर अक्षर एवं शब्द पढ़ने में बालकों की तुलना में सार्थक अधिक पाया गया. अनुसूचितजाति एवं जनजाति के बच्चों का अक्षर एवं शब्द पढ़ने में उपलब्धि स्तर अच्छा पाया गया, बालक एवं बालिकाओं का प्राप्तांक, नम्बर पहचानने, जोड़ तथा घटाने में समान पाया गया, अनुसूचित जाति के बच्चों की तुलना में अच्छा पाया गया। जबकि कक्षा 4 में बालक एवं बालिकाओं के उपलब्धि स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आधार पर भी उपलब्धि स्तर में सार्थक अंतर नहींपाया गया, बालकों के उपलब्धि का प्राप्तांक लड़कियों की तुलना में अधिक था लेकिन अंतर सार्थक नहीं पाया गया, लगभग 80 प्रतिशत शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के उपलब्धि का प्राप्तांक उत्तीर्ण अंक तक ही पाया गया।

नजीवत व विश्वकर्मा (2015)[20] ने इस शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा सामान्य विद्यालय आवासी एवं गैर आवासी छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर परिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया गया। यह शोध कार्य 1000 विद्यार्थियों पर किया गया। निष्कर्ष के रूप में सामान्य विद्यालय व शिक्षा गांरटी शाला के बालक बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर परिवारिक वातावरण के प्रभाव में आंशिक रूप से सार्थक अंतरपाया गया एवं आवासी एवं गैर आवासी ब्रिज कोर्स के बालक बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का आंशिक अंतर पाया गया।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता के संदर्भ में उनके समायोजन, आत्म-जारुकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

शोध समस्या में प्रयुक्त सन्निहित प्रत्ययो की व्याख्या

माध्यमिक शिक्षा

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) के अनुसार 'माध्यमिक शिक्षा इस प्रकार दी जानी चाहिए जिससे छात्रों की अंतर्निहित शक्तियों का विकास हो सके और सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं चारित्रिक दृष्टि से व्यवहार कुशल बन सकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार स्कूली शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम और शैक्षणिक ढांचे को 5+3+3+4 डिजाइन वाले शैक्षणिक संरचना का प्रस्ताव किया गया है जोकि 3 से 18 वर्ष की आयु वाले बच्चों को शामिल करता है ।

समस्या समाधान योग्यता

समस्या समाधान योग्यता वह क्षमता है, जो किसी समस्या की पहचान करने तथा उसके व्यावहारिक समाधान खोजने में सहायक होती है। इसे एक विशिष्ट संज्ञानात्मक कौशल के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, जिसके अंतर्गत कई अन्य संबंधित क्षमताएँ भी समाहित होती है। समस्या समाधान एक योग्यता और प्रक्रिया दोनों है, यह एक महत्वपूर्ण जीवन और कार्य कौशल है। प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही किसी न किसी प्रकार की समस्याओं से घिरा होता है। जीवन में उसकी अनेक आवश्यकताएँ एवं लक्ष्य होते हैं, जिन्हें पूर्ण करने हेतु वह निरंतर प्रयास करता है।

समायोजन

समायोजन शब्द सम+आयोजन से मिलकर बना है, जिसमें सम का अर्थ है भली-भांति या अच्छे ढंग से है, तथा समायोजन का अर्थ है व्यवस्था करना। इस प्रकार समायोजन का शाब्दिक अर्थ है परिस्थितियों को सुव्यवस्थित ढंग से अनुकूल बनाने की प्रक्रिया, जिससे व्यक्ति की आवश्यकताएँ पूरी हो सकें और मानसिक द्वंद्व समाप्त हो जाए ।

समायोजन एक निरंतर चलने वाली मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति स्वयं एवं परिवेश के मध्य संतुलन स्थापित करता है। इस संतुलन के लिए व्यक्ति को अपने व्यवहार, विचार और प्रतिक्रिया में आवश्यकतानुसार परिवर्तन करना पड़ता है।

आत्म-जागरूकता

आत्म-जागरूकता छात्रों को जीवन के अनुभवों को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आत्म-जागरूकता व्यक्ति की अपनी स्वयं के बारे में जागरूकता को दर्शाती है। यह एक मानसिक गुण है जिसमें व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं, और क्रियाओं की पहचान कर उसके परिणामों को वह समझता है। इस प्रकार इसका अर्थ है कि व्यक्ति अपनी प्रतिक्रियाओं, आवश्यकताओं, गुणों, और कमजोरियों के साथ ही वह अवगत होता है। आत्म-जागरूकता अपने विचारों एवं भावनाओं को पहचानने, व्यक्त करने, और नियंत्रित करने की क्षमता को प्रदान करती है। इससे हम अपने स्वयं की सीमाओं, मूल्यों, और संज्ञान के स्तर के बारे में जान सकते हैं और अपनी पर्सनालिटी को समझ सकते हैं यह हमें स्वयं के साथ संपर्क में रहने, अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने, अवसरों को पहचानने, एवं अपने निर्णयों को बनाने और निर्णयों को लेने में भी मदद करती है।

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य इन शिक्षण उद्देश्यों के प्राप्ति से है। छात्रों ने शैक्षिक उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया है. यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि को बताता है। शैक्षिक उपलब्धि, छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल, अनुप्रयोग आदि योग्यताओं की मात्रात्मक अभिव्यक्ति है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नवत है -

1. माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना ।
3. माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की आत्म-जागरुकता का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना ।
5. उच्च समस्या समाधान योग्यता वाले छात्र-छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
6. निम्न समस्या समाधान योग्यता वाले छात्र-छात्राओं के समायोजन का अध्ययन करना।
7. उच्च समस्या समाधान योग्यता से युक्त छात्र-छात्राओं की आत्म-जागरूकता का अध्ययन करना ।
8. निम्न समस्या समाधान योग्यता से युक्त छात्र-छात्राओं की आत्म-जागरूकता का अध्ययन करना ।
9. उच्च समस्या समाधान योग्यता से युक्त छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
10. निम्न समस्या समाधान योग्यता से युक्त छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोध माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो की समस्या समाधान योग्यता के सन्दर्भ में उनके समायोजन, आत्म-जागरूकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन हेतु शोधकर्ती द्वारा निम्नलिखित परिकल्पनाओ का निर्माण किया गया है-

1. माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की आत्म-जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. उच्च समस्या समाधान योग्यता वाले छात्र व छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. निम्न समस्या समाधान योग्यता वाले छात्र व छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
7. उच्च समस्या समाधान योग्यता से युक्त छात्र व छात्राओं की आत्म-जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
8. निम्न समस्या समाधान योग्यता से युक्त छात्र व छात्राओं की आत्म जागरुकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
9. उच्च समस्या समाधान योग्यता से युक्त छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
10. निम्न समस्या समाधान योग्यता से युक्त छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन की परिसीमाएं

प्रत्येक अनुसंधान की कुछ सीमाएं होती हैं, जिनमें रहकर ही शोधकर्ती अपना शोधकार्य करती है। उपलब्ध समय, साधन, सुविधाओं एवं चरों की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुए शोध को निम्नलिखित सीमाओं में परिसीमित किया गया है

1. यह शोध कार्य केवल उत्तर प्रदेश राज्य के सम्भल जिले तक ही सीमित रहेगा ।

2. शोध का प्रतिदर्श केवल 400 छात्र व छात्राओ (विद्यार्थियों) पर आधारित है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य मे माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययन छात्र-छात्राओं तक ही सीमित रखा गया है।
4. शोध अध्ययन केवल समस्या समाधान योग्यता के संदर्भ में उनकी समायोजन, आत्म-जागरूकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन पर ही आधारित है।

शोध अध्ययन के लिए प्रयुक्त शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति को ध्यान में रखकर ही शोधकर्ती ने वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि को अपनाया है।

शोध अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध उत्तर प्रदेश राज्य के सम्भल जिले के चंदौसी तहसील में स्थित सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के 15 -17 वर्षीय किशोर छात्र छात्राओं पर आधारित है जो माध्यमिक कक्षा (10) के विद्यार्थी है।

अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरण

1. समस्या समाधान योग्यता परीक्षण एल.एन. दुबे, (जबलपुर)
2. समायोजन परीक्षण डॉ. राम जी श्रीवास्तव, डॉ. बीना श्रीवास्तव (आजमगढ़)
3. आत्म-जागरूकता परीक्षण डॉ. अरुण कुमार (लखनऊ), सुधीर कुमार (हरदोई)
4. शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण हाईस्कूल का (प्री-बोर्ड) परीक्षाफल

शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर निम्नवत है

स्वतंत्र चर - समस्या समाधान योग्यता

आश्रित चर - समायोजन, आत्म-जागरूकता, शैक्षिक उपलब्धि

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित सांख्यिकीय प्रयुक्त किया गया है

मध्यमान,

मानक विचलन ,

टी-टेस्ट ,

प्रस्तावित अध्याय योजना -

अनुक्रमणिका

अध्याय	**विषय**
प्रथम अध्याय	प्रस्तावना
	समस्या की पृष्ठभूमि
	समस्या कथन
	शोध समस्या में प्रयुक्त सन्निहित प्रत्ययो की व्याख्या
	माध्यमिक शिक्षा
	समस्या समाधान योग्यता
	समायोजन
	आत्म-जागरूकता
	शैक्षिक उपलब्धि
	शोध अध्ययन के उद्देश्य शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं
	अध्ययन की आवश्यकता
	शोध अध्ययन की परिसीमाएं
द्वितीय अध्याय	संबंधित साहित्य की समीक्षा
	संबंधित साहित्य सर्वेक्षण
	सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन
	समस्या समाधान योग्यता से सम्बन्धित अध्ययन
	समायोजन से संबंधित अध्ययन
	आत्म-जागरूकता से संबंधित अध्ययन
	शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित अध्ययन
	सम्बन्धित अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष
तृतीय अध्याय	शोध अध्ययन विधि
	शोध का प्रारूप
	शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर
	शोध के प्रकार
	शोध विधि

	शोध अध्ययन की जनसंख्या
	प्रतिदर्श
	अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरण
	शोध उपकरण का विवरण
	समस्या समाधान योग्यता परीक्षण
	समायोजन परीक्षण
	आत्म-जागरूकता परीक्षण
	शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण
	शोध अध्ययन मे प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि
	मध्यमान
	मानक विचलन
	टी-टेस्ट
चतुर्थ अध्याय	ऑकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या,परिचर्चा
	आँकड़ों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या, परिचर्चा
पंचम अध्याय	निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव
	निष्कर्ष
	शोध निहितार्थ
	शैक्षिक निहितार्थ
	भावी शोध हेतु सुझाव
सन्दर्भ ग्रंथ सूची	

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

[1] अल्टेकर, ए. एस. (1959). एजुकेशन इन एंशिएंट इंडिया. वाराणसी: बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन।

[2] शफी, एस. ए. (2000). प्रोब्लम सोल्विंग एक्टिविटिज फॉर सीनियर सेकंडरी बॉयोलॉजी स्टूडेंट्स, जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, 26 (3), 81-87

[3] जैन, (2000). प्रोमोटिंग क्रिएटिव प्रॉब्लम सोल्विंग इन फिजिक्स, जरनल ऑफ द इंडियन एजुकेशन, 26(3), 97-106

[4] दत्त (2001). मनोहरन, आर जे लुइस. फोस्टरिंग क्रिएटिविटी थ्रू प्रोब्लम सॉल्विंग इन मेथेमेटिक्स, एजुट्रेक, 5(11), 11-13.

[5] डुवल, टी.एस., और सिल्विया, पी.जे. (2002)। आत्म-जागरूकता, सुधार की संभावना, और स्वार्थी पूर्वाग्रह। जर्नल ऑफ पर्सनालिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 82(1), 49-61।

[6] ब्रेनर, बी.आर. (2003)। आत्म-जागरूकता, आत्म-प्रभावकारिता और ओवरटाइम के लिए प्रवासी समायोजन का एक अध्ययन। पीएच.डी. थीसिस, ग्रेजुएट स्कूल के संकाय। मैरीलैंड कॉलेज पार्क विश्वविद्यालय।

[7] मायर्स, एस. (2003). आत्म-जागरूकता किस प्रकार व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देती है, इस पर चिंतन। पर्सन-सेंट्रलर्ड जर्नल, 3, 3-22.

[8] भाटिया, डॉ. तारेश (2003). मनोवैज्ञानिक सांख्यिकी, लावण्य प्रकाशन ।

[9] शर्मा, एच.एन.एवं शर्मा, अन्जना (2003). आधुनिक मनोवैज्ञानिक के आधार, एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, आगरा (उत्तर प्रदेश)।

[10] भार्गव, डॉ. महेश एवं भार्गव, डॉ. वीणू (2007). मानव विकास का मनोविज्ञान, एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, आगरा (उत्तर प्रदेश)।

[11] शर्मा, डॉ. एस.एन. (2007). शिक्षा में मनोविज्ञान, एच.पी. भार्गव बुक हाऊस, आगरा (उत्तर प्रदेश)।

[12] रणविजय सिंह (2007)- "उच्च समायोजित तथा निम्न समायोजित विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन" शोध पत्र, न्यूडाइर्मेसन्स इन एजूकेशनल रिसर्च वाल्यूम-VI, दिस. 2007, पृ. 75-76

[13] एस. के. मंगल (2007). एडवांस्ड एजुकेशनल साइकोलॉजी. नई दिल्ली: पीएचआई लर्निंग प्रा. लि.।

[14] सारिका तिवारी (2009)- विद्यार्थयों में समायोजन का अध्ययन" एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका वर्ष 28, अंक 1 जनवरी-जून 2009, पृ. 111

[15] अग्रवाल, जे. सी. (2010). एसेंशियल्स ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी. नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।

[16] पान्डे, (2010): प्रोब्लम सॉल्विंग एबिलिटी इन नॉन-फॉर्मल एजुकेशन, इंडियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एंड एजुकेशन, 41(1), 58-62

[17] भटनागर, डॉ. ए.बी., भटनागर, डॉ. मीनाली एवं भटनागर, अनुराग (2010). शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ (उत्तर प्रदेश)।

[18] अली अहमद (2012) प्राथमिक विद्यालय के बच्चों की उपलब्धि स्तर का अध्ययन लघुशोध भोपाल : बरकतउल्ला विश्वविद्यालय

[19] राव, सुनील। (2015). शिक्षा विषय पर एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज़, [डॉ. तिर्मल सिंह द्वारा संपादित], प्रभावकारिता सूचकांक = 0.564।

[20] नजीवत व विश्वकर्मा (2015), 'सामान्य विद्यालय आवासी एवं गैर आवासी छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर परिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन" साइको-लिंग्वा, 2015 वैल्यूम 64 नं0 4

[21] इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च।

[22] गूगल स्कॉलर, https://scholar.google.com से प्राप्त स्रोत ।

[23] शोधगंगा, https://shodhganga.inflibnet.ac.in से प्राप्त स्रोत।